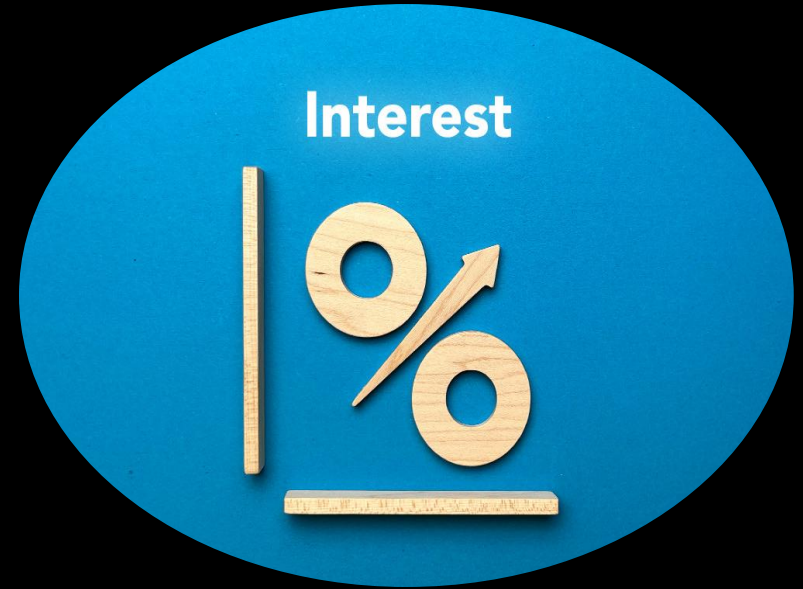


ब्याज का प्रतिष्ठित सिद्धांत (Classical Theory of Interest)

ब्याज (INTEREST) क्या है?

राष्ट्रीय आय का वह भाग जो पूंजी की सेवाओं के बदले में पूंजीपति को दिया जाता है ब्याज कहलाता है।



दूसरे शब्दों में,

ब्याज पूंजी की सेवाओं का पुरस्कार या कीमत है

मेयर्स के अनुसार, “ब्याज उस कीमत को कहते हैं जो उधार देने योग्य कोषों के प्रयोग के बदले में दी जाती है।”

प्रो. विक्सेल के अनुसार, “ब्याज पूंजी की उपयोग के लिए ऋणी तथा पूंजीपतियों को उसके त्याग के बदले में दिया जाने वाला भुगतान है”

शुद्ध (वास्तविक) ब्याज तथा कुल ब्याज

शुद्ध या वास्तविक ब्याज (NET INTEREST)

यह केवल पूंजी के पुरस्कार की कीमत है और कुल ब्याज का सबसे महत्वपूर्ण अंग माना जाता है।

इस प्रकार,

शुद्ध ब्याज कुल व्याज का भाग है जो केवल पूंजी के प्रयोग के बदले दिया जाता है अर्थात् शुद्ध ब्याज के अंतर्गत केवल पूंजी का परितोषण ही सम्मिलित होता है

कुल ब्याज (GROSS INTEREST)

कुल ब्याज एक ऋणी द्वारा ऋणदाताओं को किया गया वह भुगतान है जिसके अंतर्गत शुद्ध ब्याज के अलावा कुछ अन्य प्रकार के भुगतान जैसे **जोखिम, असुविधा तथा कष्ट** आदि के लिए भुगतान सम्मिलित होते हैं।

प्रो. चैपमैन ने कहा, "कुल ब्याज में शुद्ध ब्याज अतिरिक्त ऋण देने से संबंधित व्यक्तिगत तथा **व्यावसायिक जोखिम** के लिए पुरस्कार, असुविधाओं के लिए पारितोषण तथा विनियोग की व्यवस्था एवं **देखभाल करने की भुगतान** सम्मिलित होता है।"

ब्याज का प्रतिष्ठित सिद्धांत (CLASSICAL THEORY OF INTEREST)

प्रतिपादक- रिकार्डो, मार्शल, पीगू

सिद्धांत की पुष्टि- कैसल, बालरस, टाजिक और नाइट

यह सिद्धांत यह मानकर चलता है कि ब्याज के निर्धारण में मुद्रा प्रत्यक्ष भूमिका अदा नहीं करती बल्कि इस सिद्धांत में ब्याज के निर्धारण में उत्पादकता तथा मितव्ययिता जैसे वास्तविक तत्वों पर ज़ोर दिया गया है इसलिए इस सिद्धांत को वास्तविक सिद्धांत भी कहते हैं।

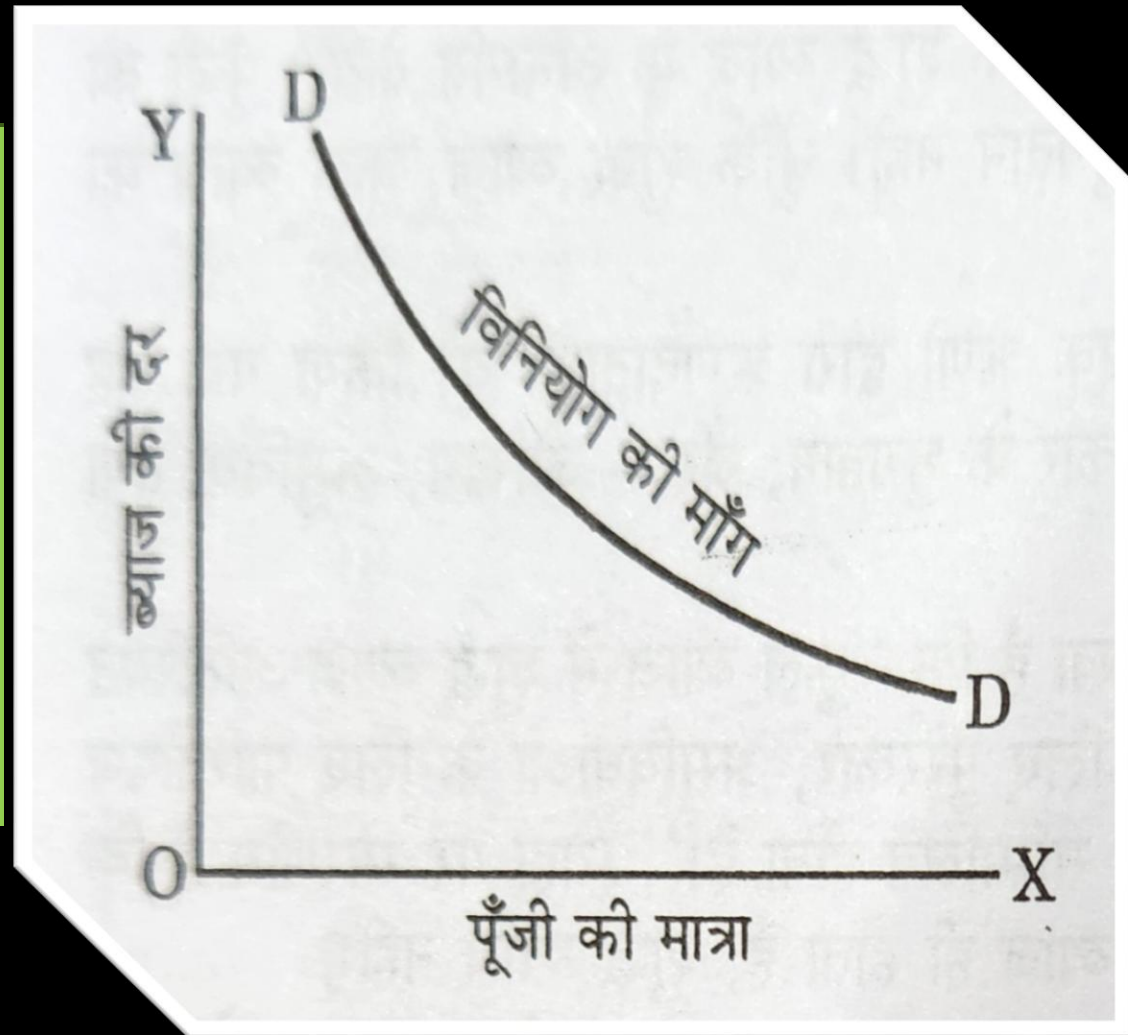
इस सिद्धांत के अनुसार,

ब्याज की दर **पूंजी की मांग और पूर्ति** के द्वारा निर्धारित होती है।

पूंजी विनियोग की मांग

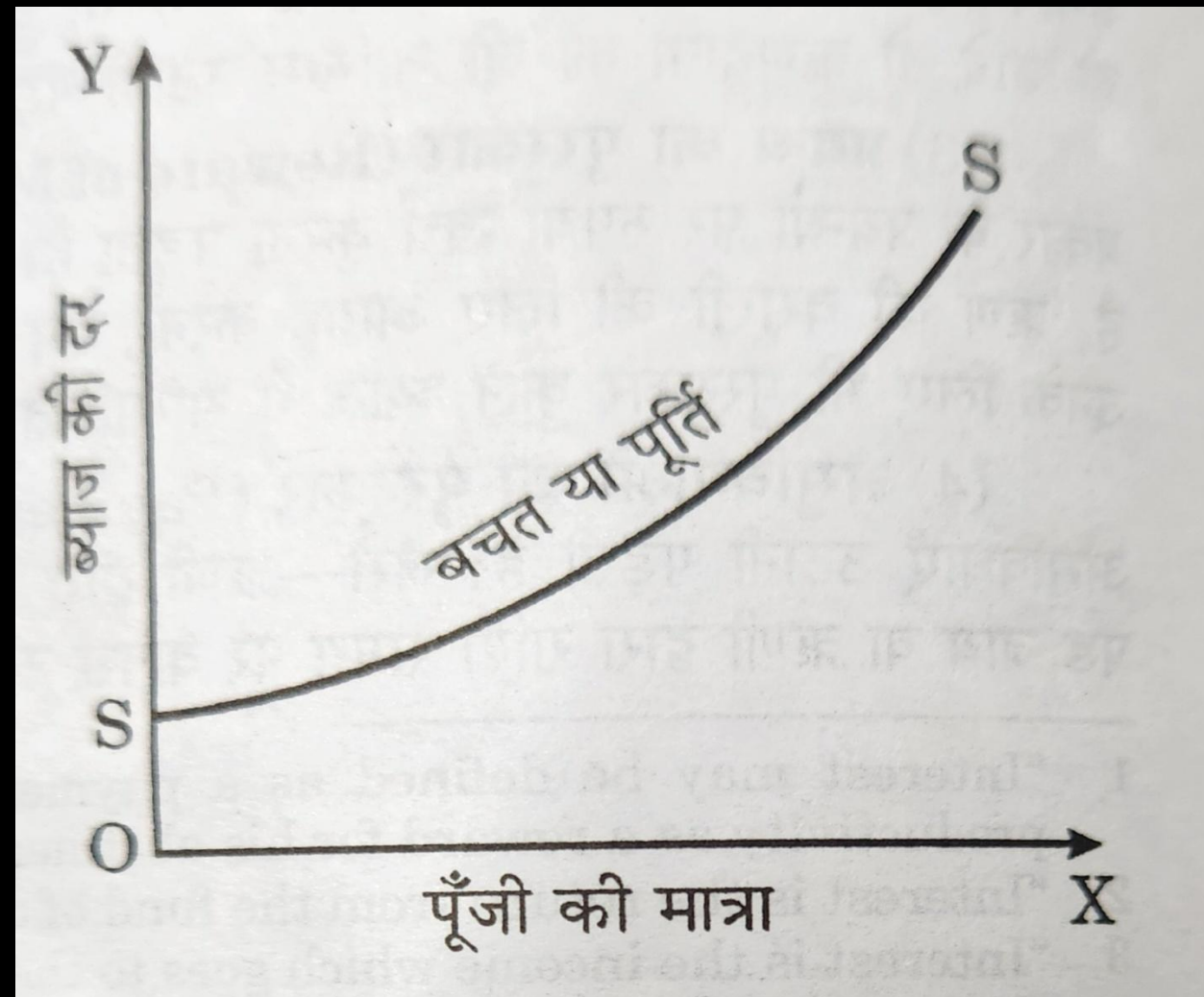
पूंजी की मांग उत्पादकों द्वारा की जाती है जो अपने उत्पादन में उसका उपयोग करते हैं। *उत्पादक पूंजी की मांग केवल इसलिए करता है कि वह उसके द्वारा अधिक धन उत्पन्न कर सकता है।*

पूंजी की मांग की उत्पादकता के कारण होती है परंतु पूंजी का अधिकाधिक उपयोग करने से उसकी उत्पादकता उत्तरोत्तर कम होती चली जाती है और अंत में पूंजी की एक इकाई ऐसी आती है जिसपर दिया जाने वाला ब्याज उसके द्वारा उत्पत्ति की कीमत के बराबर होता है।



पूंजी अथवा बचत की पूर्ति

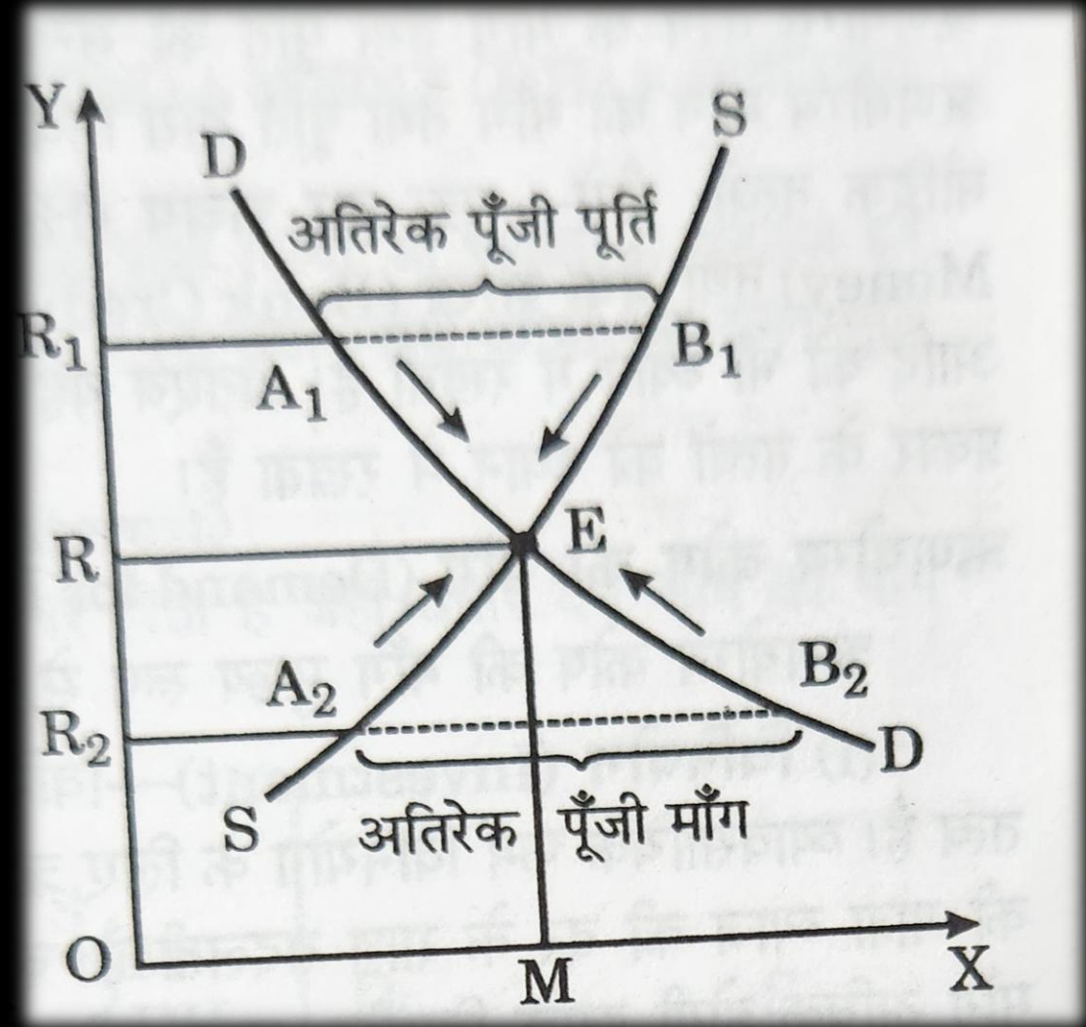
पूंजी की पूर्ति **बचत की मात्रा** पर निर्भर रहती है बचत की मात्रा बहुत से तत्वों पर निर्भर रहती है- जैसे लोगों की आय की मात्रा, जीवन स्तर, दूरदर्शिता, ब्याज की दर आदि परंतु इन तत्वों में बचत का प्रमुख निर्धारण ब्याज की दर होती है। ब्याज की दर अधिक होने पर पूंजी की पूर्ति भी अधिक होती है।



ब्याज दर निर्धारण अथवा बचत विनियोग की समानता

ब्याज का निर्धारण उस बिंदु पर होता है जहाँ पर कुल बचत विनियोग का संतुलन होता है।

यदि किसी समय बचत की मात्रा विनियोग की मात्रा से अधिक हो जाती है तो ब्याज की दर गिर जाती है, ब्याज की दर गिरने पर उत्पादक पूंजी की अधिक मांग करेंगे इसका फल यह होगा एक ओर ब्याज की दर कम होने से उत्पादों की पूंजी की मांग बढ़ जाएगी।



सिद्धांत की आलोचनाएँ

बचत व विनियोग में समानता- इस सिद्धांत के अनुसार विनियोग व बचत से समानता ब्याज की माध्यम से स्थापित होती है, वास्तविकता में ऐसा नहीं होता है।

ब्याज बचत का प्रतिफल है- ब्याज बचत का प्रतिफल नहीं है क्योंकि एक व्यक्ति उस पूंजी पर भी जो कि उसके पूर्वजों ने अर्जित की है ब्याज कमा सकता है इस प्रकार यदि व्यक्ति अपनी बचत को अपने पास नगद रूप में रखें तो उसे किसी प्रकार का ब्याज प्राप्त नहीं होता है।

बचत और विनियोग योग पर ब्याज का प्रभाव प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों का विचार भी गलत है कि विनियोग एवं बचत दोनों ब्याज से प्रभावित होती है परंतु विनियोग ब्याज की दर से नहीं बल्कि पूंजी की सीमांत उत्पादकता अर्थात् व्यवसाय में होने वाला लाभ से भी अधिक प्रभावित होता है

मुद्रा की मात्रा यद्यपि त्याग की मात्रा पर मुद्रा के परिणाम का भी प्रभाव पड़ता है परंतु सिद्धांत में मुद्रा की मात्रा को कुछ भी महत्त्व नहीं दिया गया है।